

## 21. भारतीय इतिहास के स्वर्णाक्षर

—अमरदेव आंगिरस

(1)

भारत के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम में रानी लक्ष्मीबाई का नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित है। इतिहास में रानी लक्ष्मीबाई जैसी वीरांगना का नाम मिलना असंभव है। 1857 के संग्राम की अपनी डायरी में झांसी की रानी के कुल पुरोहित श्री विष्णु भट्ट ने लिखा है - “झांसी के घमासान युद्ध के बाद जब भागते-भागते हम पौ फटने से पहले एक गाँव के बाहर एक कुएँ पर बैठे अपनी थकान मिटा रहे थे, उसी समय चार-पाँच घुड़सवार वहाँ से गुजरे जिन में झांसी की रानी भी थी। पठानों का-सा वेश धारण किया हुआ था। उनका सारा शरीर धूलि-धूसरित था। वे बहुत प्यासी थीं। यहीं कारण था कि वे तुरन्त कुएँ के समीप आ पहुँची। मुझे उन्होंने तुरन्त पहचान लिया और घोड़े से नीचे उतरीं। मैं समझ गया और इसलिए तुरन्त रस्सी और डोल लेकर कुएँ की ओर बढ़ा। इतने में महारानी ने कहा - ‘आप विद्वान हैं, क्या आप मेरे लिए पानी खींचेंगे ? यह नहीं हो सकता। मैं अंग्रेजों से झांसी में लड़ाई में हारी अवश्य हूँ पर अपनी संस्कृति और सभ्यता से अब भी परिचित हूँ। विद्वान व्यक्ति राजा से भी ऊँचा होता है।’

थोड़ी देर बाद वे सुस्ता कर बोलीं - “पुरोहित जी, देखिए मेरे लिए तो एक मुट्ठी चावल ही बहुत हैं। वैधव्य की जिन्दगी में भारतीय नारी को इससे अधिक कुछ नहीं चाहिए, उसे इतने में ही संतोष कर लेना चाहिए। लेकिन मैं आजादी की लड़ाई में इसलिए कूदी कि महाराज के मरने के बाद जनता की देख-रेख का काम मुझ पर ही था। जो अत्याचार और अनाचार हो रहे थे, उसे सहना भारत माँ के लाडलों का धर्म नहीं था। अपने धर्म और कुल-मर्यादा के प्रति जो कर्तव्य भावना हमारे देश में परम्परागत चली आई है, उसी ने मेरे हृदय को बुरी तरह झकझोरा और भारत की स्वतंत्रता और स्वाभिमान के लिए मुझे युद्ध में कूदना पड़ा। मैंने जीवन और सारी संपदाओं का मोह त्याग दिया है। राज्य की सभी सम्प्रदाओं की सुविधाओं को प्रदान करने वाली जनता है, जब वही घोर कष्ट में हो, तो मैं राज किस पर करूंगी। इसलिए मैं तब तक संतोष की साँस नहीं लूँगी, जब तक जनता के कष्टों का निवारण न कर लूंगी।”

इतिहास साक्षी है कि वीरांगना महारानी झांसी ने उसके बाद युद्ध में शत्रुओं के दांत खट्टे कर दिये थे और युद्ध क्षेत्र में शहीद हो गई थीं।

(2)

काकोरी क्रान्तिकारियों के अग्रणी अमर शहीद श्री रामप्रसाद ‘विस्मिल’ को फांसी लगने से पूर्व उनकी माता जेल में मिलने गईं। उन्हें देखते ही विस्मिल की आँखों में आँसू आ गये परन्तु माँ ने उस समय जो वाक्य कहे, वे आज हर माता के लिए प्रेरणादायक हैं। उन्होंने कहा - “इतने दिन तो तुम भारत माता के लिए आँसू बहाते रहे और अब अंतिम समय पर हमारे लिए रो रहे हो ? इस समय तुम अपना दिल छोटा न करो, बेटा। तुम्हें वीर की भान्ति हँसते हुए प्राण दे देने चाहिए, तभी

मेरी कोख सार्थक होगी। मुझे गर्व है कि इस अभाव-अभियोग में भी मेरे बेटे ने हँसी-खुशी देश की बलिवेदी पर अपनी जान दे दी। मेरा काम तो तुम्हें पाल-पोस कर बड़ा करना था। तुम्हारा शरीर एवं आत्मा दोनों देश के ही हैं। मुझे प्रसन्नता है कि वे दोनों भारत माता की गुलामी की जंजीरों को तोड़ने में काम आ रहे हैं।”

वीर माता के इन शब्दों का उत्तर देते हुए वीर पुत्र ने कहा - ‘माँ, मुझे मरने का दुःख नहीं है। जो जन्म लेता है, वह मरता अवश्य है। जिस तरह अग्नि के पास रह कर घी पिघले बिना नहीं रह सकता, उसी तरह मेरी दशा हुई है। आप विश्वास रखिये आपका बेटा वीरोचित मौत मरेगा।’

माँ-बेटे का संवाद सुनकर जेल के सभी कर्मचारियों की आँखों में आँसू छलछला आये। फाँसी के तख्ते पर लटकते हुए ‘विस्मिल’ ने कहा था -

“मालिक तेरी रजा रहे,

और तू ही तू रहे।

बाकी रहूँ न मैं

न मेरी आरजू रहे।

जब तक कि तन में जान,

रगों में लहू रहे।

तेरा ही जिक्र था,

तेरी ही जुस्तजू रहे।”

### अभ्यास

1. पठान वेश में झांसी की रानी तथा राजपुरोहित में क्या बातचीत हुई ?
2. झांसी की रानी ने भारतीय विधवा के जीवन की किस अवस्था का उल्लेख किया है ?
3. झांसी की रानी ने हमारी संस्कृति की किस विशेषता का उल्लेख किया है ?
4. ‘विद्वान बड़ा है या राजा ?’ संस्मरण के आधार पर सिद्ध कीजिए।
5. झांसी की रानी ने देश प्रेम की ये भावनाएं कब व्यक्त की थीं ?
6. काकोरी हत्याकांड में कौन-कौन क्रांतिकारी युवक थे ? अपने अध्यापक से इसकी जानकारी लें।
7. राम प्रसाद ‘विस्मिल’ की आँखों में माँ को देख कर आँसू क्यों आए ?
8. ‘विस्मिल’ की माँ ने किन शब्दों में पुत्र को प्रेरणा तथा धैर्य प्रदान किया ?
9. विस्मिल ने माँ को क्या प्रत्युत्तर दिया ?
10. रामप्रसाद विस्मिल की जीवनी पुस्तकालय से लेकर पढ़ें।